

### **NEERAJ®**

# M.H.D.- 1 हिन्दी काव्य-1

(आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

**Chapter Wise Reference Book Including Many Solved Sample Papers** 

-Based on

## 

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Dr. Shanti Swaroop Gupt, M.A. (Hindi), Ph.D.



(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: -

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ **450/**-

Published by:



(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail: info@neerajbooks.com Website: www.neerajbooks.com

### © Copyright Reserved with the Publishers only.

### Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

### Disclaimer/T&C

- 1. For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.
- 2. This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.
- 3. These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.
- 4. In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book
- 5. The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.
- 6. Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.
- 7. The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.
- 8. All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.
- 9. All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.

### Get books by Post & Pay Cash on Delivery:

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

### <u>Content</u>

### हिन्दी काव्य-1

### ;आदि काव्य, भिकत काव्य एवं रीति काव्यद्ध

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June-2023 (Solved)	1-3
Question Paper—December-2022 (Solved)	1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved)	1
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved)	1-6
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved)	1-3
Question Paper—December, 2019 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-3
Question Paper—December, 2018 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2017 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1-2
S.No. Chapterwise Reference Book	Page
खण्ड-1 आदि काव्य 1. पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता, भाषा और काव्यरूप	1
1. पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता, भाषा और काव्यरूप	12
<ol> <li>पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता, भाषा और काव्यरूप</li> <li>पृथ्वीराज रासो का काव्यत्व</li> </ol>	
<ol> <li>पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता, भाषा और काव्यरूप</li> <li>पृथ्वीराज रासो का काव्यत्व</li> <li>विद्यापित और उनका युग</li> </ol>	
<ol> <li>पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता, भाषा और काव्यरूप</li> <li>पृथ्वीराज रासो का काव्यत्व</li> <li>विद्यापित और उनका युग</li> <li>गीतिकाव्य के रूप में विद्यापित पदावली</li> </ol>	

S.No	c. Chapterwise Reference Book	Page
7.	सूफी मत और जायसी का पद्मावत	86
8.	पद्मावत में लोक परंपरा और लोक जीवन	112
खण्ड-	3 भिक्त काव्य-2 (सगुण काव्य)	
9.	भिक्त आंदोलन के संदर्भ में सूर का महत्त्व	129
10.	सूरदास के काव्य में प्रेम	143
11.	मीरा का काव्य और समाज	177
12.	मीरा का काव्य सौंदर्य	187
13.	तुलसीदास के काव्य में युग संदर्भ	195
14.	एक किव के रूप में तुलसीदास	199
खण्ड-	4 रीति काव्य	
15.	बिहारी के काव्य का महत्त्व	235
16.	घनानंद के काव्य में स्वच्छंद चेतना	261
17.	पद्माकर की कविता	293

# Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:



www.neerajbooks.com

### **QUESTION PAPER**

June - 2023

(Solved)

हिन्दी काव्य-1 (आदि काव्य, भिक्त काव्य एवं रीति काव्य)

M.H.D.-1

समय : 2 घण्टे | [ अधिकतम अंक : 50

नोट : कुल चार प्रश्नों के उत्तर देने हैं। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

(क) साधो, देखो जग बौराना।
साँची कहौ तौ मारन धावै झूँठे जग पितयाना।
हिन्दू कहत है राम हमारा मुसलमान रहमाना।
आपस मैं दोऊ लड़े मरतु हैं मरम कोई निहं जाना।
बहुत मिले मोहिं नेमी धर्मी प्राप्त करैं असनाना।
आतम-छोड़ि पषानै पूजें तिनका थोथा ज्ञाना।
आसन मारि डिंभ धरि बैठे मन में बहुत गुमाना।

प्रसंग-प्रस्तुत पद कबीरदास द्वारा रचित है। इस पद में कबीर ने धर्म के आडंबर करने वालों पर व्यंग्य किया है।

व्याख्या—कबीर के अनुसार जो सच्चा जन सत्य आचरण करता है, सत्य में मार्ग पर चलता है, उसे लोग पागल समझते हैं और सत्य बोलने पर मारने के लिए दौड़ते हैं। जो मायाजनित झूठ का आचरण करता है, उससे लोग बातें करके खुश होते हैं। नियमों पर चलने वाले लोग, नेमी धर्मी लोग बहुत हैं जो सभी नियमों का पालन करते हैं, सुबह उठकर स्नान करते हैं लेकिन वे अपनी आत्मा की नहीं सुनते हैं। ऐसे लोग अपनी आत्मा को मार चुके होते हैं, आत्मा की नहीं सुनते हैं, वे पत्थर में ईश्वर को ढूंढते हैं और प्रतीकात्मक पूजा करते हैं, जबिक मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं है, मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है, सत्य की राह पर चलना और इंसान को इंसान समझना ना कि वह किस धर्म का है, किस जाित का है।

वस्तुत यहाँ पर कबीर ने हिन्दू धर्म पर कटाक्ष किया है। हिन्दू धर्म को मानने वाले अपने नियमों का पालन करते हैं, लेकिन उनके आचरण में मिथ्या और झूठा आचरण, दिखावे की भिक्त ही होती है। कण-कण में ईश्वर का वास है उसे प्राप्त किया जा सकता है सत्य से। सत्य यही है कि सभी लोगों को समान समझे, किसी पर धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक अत्याचार ना किया जाए, यही सच्ची भिक्त है।

दूसरी तरफ मुसलमान भी आडम्बर और पाखंड से परे नहीं हैं। मुस्लिम धर्म के उपदेशक और औलिया आदि बड़ी-बड़ी किताबों को तो पढ़ लेते हैं, लेकिन उन्हें अपने जीवन और आचरण में नहीं उतारते हैं। ईश्वर की प्राप्ति के वे बहुत से मार्ग और माध्यम बताते हैं, लेकिन उन्हें स्वंय ही आत्मज्ञान नहीं है तो वे लोगों को क्या बताएँगे? दूसरी और मानवता को भूलकर योग करने वालों पर भी साहेब व्यंग्य कसते हैं और कहते हैं कि ऐसे लोग अहंकार करके एक स्थान पर बैठे रहते हैं लेकिन उन्होंने भी सच्चे रहस्य को प्राप्त नहीं किया है।

हिन्दू धर्म के लोगों को राम प्यारा है और मुस्लिम धर्म के लोगों को रहमान प्यारा है। इसी बात को लेकर दोनों आपस में ही लड़ रहे हैं, लेकिन दोनों ने ही रहस्य को नहीं जाना है। रहस्य क्या है, रहस्य है कि सभी का मालिक एक ही है उसे पृथक-पृथक कर दिया है और उसके नाम भी कई रख दिए हैं, लेकिन है एक ही। पाखंडी लोग घर-घर घूम कर लोगों को मन्त्र देते फिर रहे हैं, लेकिन वे स्वयं भी अज्ञान में ही डूबे हुए हैं। अन्तकाल में ऐसे लोगों के हाथ सिर्फ पछतावे ही लगना है और कुछ भी नहीं।

विशेष—कबीर साहेब ने जीवन पर्यंत धार्मिक और सामजिक आडम्बरों का ना केवल विरोध किया बल्कि लोगों का सत्य आचरण की ओर मार्ग भी प्रशस्त किया। अपने जीवन की परवाह ना करते हुए धार्मिक और सामंती ठेकेदारों के कारनामों से लोगों को बताकर उन्हें भी सत्य मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। साहेब की आवाज सदा ही समाज के दबे कुचले लोगों की आवाज बनी रही। धार्मिक पाखंड हो या सामाजिक सभी का खंडन कबीर साहेब ने किया है। साहेब का जो मूल सन्देश है यह है कि आडम्बर और मिथ्या आचरण का त्याग करो और जो सत्य की राह है, उस पर चलो, मानव जीवन तभी सार्थक होगा। मनुष्य को मनुष्य समझना ही सबसे बडा धर्म है और कल्याण का मार्ग है।

2 / NEERAJ : हिन्दी काव्य-1 (JUNE-2023)

(ख) अबलौ नसानी, जब न नसैहौं। राम-कृपा भव-निसा सिरानी जागे पुनि न डसैहौं॥ पायो नाम चारुचिंतामनि, उर कर ते न खसैहौं। स्यामरूप सुचि रुचिर कसौटी, चित कंचनहिं

> परबास जानि हँस्यो इन इन्द्रिन, निज बस ह्वे न हँसैहों।

मन मधुकर पन के तुलसी रघुपति-पद-कमल बसैहौं॥ उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-14, पृष्ठ-233, व्याख्या-6

(ग) निर्गुन कौन देस को बासी?

मधुकर! हाँसि समुझाय, सौंह दै बूझित साँच, न हाँसी॥

को है जनक, जनिन को कहियत, कौन नारि, को दासी?

कैसो बरन भेस है कैसो केहि रसै में अभिलासी। पावैगो पुनि कियो आपनो जो रे! कहैगो गाँसी। सुनत मौन ह्वै रह्यो ठग्यो सो सूर सबै मित नासी॥

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-10, पृष्ठ-171, व्याख्या-22 (घ) फागु के भीरे अभीरत तें गहि गोबिंद लै गई

भीतर गोरी।

भाई करी मन की पद्माकर ऊपर नाई अबीर की झौरी। छीन पितंबर कमर ते सु बिदा दई मीड़ि कपोलन रौरी।

नैन नचाइ कह्यो मुसकाइ लला फिर आइयौ खेलन होरी॥

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-17, पृष्ठ-306-307, व्याख्या-5 प्रश्न 2. गीतिकाव्य के रूप में 'विद्यापित पदावली' की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

**उत्तर-संदर्भ-**देखें अध्याय-4, पृष्ठ-22, प्रश्न 1, पृष्ठ-24, प्रश्न 2, पृष्ठ-26, प्रश्न 3

प्रश्न 3. कबीर साहित्य के मूल्यांकन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-5, पृष्ठ-57, प्रश्न 2

प्रश्न 4. 'पद्मावत' में निहित लोकतत्व का विवेचन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-8, पृष्ठ-112, प्रश्न 1 प्रश्न 5. मीरा की कविता में अभिव्यक्त प्रेमानुभूति और प्रेम विह्वलता का विवेचन कीजिए।

**उत्तर-संदर्भ-**देखें अध्याय-11, पृष्ठ-184, प्रश्न 4

प्रश्न 6. घनानंद के काव्य-कौशल का परिचय दीजिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-16, पृष्ठ-280, प्रश्न 8

प्रश्न 7. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए-

(क) 'पृथ्वीराज रासो' का काव्य-रूप

**उत्तर-संदर्भ-**देखें अध्याय-1, पृष्ठ-4, प्रश्न 2

(ख) तुलसी की लोकमंगल भावना

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-14, पृष्ठ-208, प्रश्न 5

(ग) सूर की काव्य-भाषा

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-9, पृष्ठ-136, प्रश्न 3

(घ) बिहारी की शृंगारिकता

**उत्तर-संदर्भ-**देखें अध्याय-15, पृष्ठ 241, प्रश्न-4

इसे भी देखें—अनुभाव—चित्रण—उक्ति वैचित्र्य तथा वाग्विद्ग्धता की दृष्टि से बिहारी रीतिकाल के किवयों में सर्वोपिर हैं। शब्द—चमत्कार, व्यंजना—शिक्ति, अलंकार—योजना, व्यंग्य तथा कटाक्ष ने उनके दोहों को कला—मर्मज्ञों के लिए अत्यंत प्रिय बना दिया है। अपनी सूक्ष्म निरीक्षण—शिक्त तथा मानव—हृदय के भावों में गहरी पैठ के कारण उन्होंने नायिका के हाव—भावों, अनुभावों का जैसा सर्वांगीण एवं कुशल चित्रण किया है, उससे उनकी किवता कला—दीर्घा बन गयी है। निम्नलिखित दोहे में नायिका की भाव—भांगमा देखते ही बनती है—

### बतरस लालच लाल की मुरली धारी लुकाय। सौंह करे, भौंहनि, हंसै, दैन कहै, नटि जाय॥

कृष्ण से वार्तालाप करने तथा उन्हें पास बिठाने के लिए लालायित राधा के इस चित्र से प्रेमी-युगल के सरस, विनोदशील हृदयों का पता चलता है। यहां एक ही भाव की व्यंजना के लिए अनेक अनुभावों की योजना की गयी है।

इसी प्रकार का चित्र निम्नलिखित दोहे में है, जहां नायिका झरोखे में से नायक को देखने के लिए उत्सुक है, पर साथ ही संकोच और लज्जा के कारण झिझक रही है—

समरस समर सकोच बस, बिबस न ठिकु ठहराय। फिरि फिरि उझकित, फिरि दुरित, दुरि दुरि उझकित जाय।

किव ने अपने शब्द-कौशल से ऐसे चित्र भी प्रस्तुत किये हैं, जहां नायिका का बाह्य सौंदर्य तथा आंतरिक मनोभाव दोनों प्रकट होते हैं—

### छुटी न सिसुता की झलक, झलक्यौ जोबनु अंग। दीपति देह दुहन मिलि, दिपति ताफ रंग॥

इस दोहे में किव ने वय:संधि के समय नायिका की शारीरिक दीप्ति का चित्र तो खींचा ही है, साथ ही सकेत दिया है कि उसके

# Sample Preview of The Chapter

Published by:



www.neerajbooks.com

हिन्दी लाव्य - 1

आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य

खण्ड-1

आदि काव्य

### प थ्वीराज रासो की प्रामाणिकता, भाषा और काव्यरूप



प्रश्न 1. रासो शब्द की ब्युत्पित्त तथा पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता के संबंह में विभिन्न विद्वानों के विचार प्रस्तुत करते हुए आप अपना मत बताइये।

जत्र-रासो-काव्य हिन्दी के प्राचीनतम काव्य हैं जो धीरे-धीरे इतिहास की अंधकाराच्छन्न गुहा से निकलकर आलोक में आ रहे हैं। अत्यन्त प्राचीन काव्य होने के कारण न केवल रासो-काव्यों के संबंध में ही अनेक भ्रान्तियों ने जन्म लिया है, अपितु स्वयं 'रासो' शब्द के संबंध में भी अनेक भ्रामक धारणाएँ विद्वानों द्वारा व्यक्त की गई हैं।

प्रसिद्ध इतिहासकार गार्सा द तासी के अनुसार रासो शब्द की व्युत्पत्ति राजसूय शब्द से हुई है, परन्तु न सभी चरित-कार्व्यों में राजसूय यज्ञ का वर्णन है और न संदेशरासक, बीसलदेव रासो आदि कार्व्यों में । इनमें केवल वीर रस का वर्णन है । (उनमें अन्य रसों का भी समावेश है), अतः यह मत स्वीकार्य नहीं ।

नरोत्तम स्वामी ने 'रिसक' शब्द से रासो की व्युत्पित्त मानी है-रिसक : रासउ : रासो । उन्होंने रिसक का अर्थ कथा या काव्य माना है । यह व्युत्पित्त रासो के संबंध में तो ठीक है, परन्तु जिन कार्व्यों का नाम रासक या रास हैं, उनकी संगति इस मत से नहीं बैठती ।

कुछ विद्वानों ने 'रहस्य' शब्द से और कुछ ने 'रिसया' शब्द से रासो का संबंध जोड़ा है। पर रासो काव्यों में न तो गूढ़ रहस्यमयता ही मिलती है और न केवल भद्दा स्थूल शृंगार ही। ये काव्य न तो एकान्त रूप से शृंगारी काव्य हैं और न रहस्यवादी । अतः ये मत भी उपयुक्त प्रतीत नहीं होते ।

आचार्य शुक्ल ने रासो की व्युत्पत्ति के लिए रसायन शब्द प्रस्तुत किया था और प्रमाण के लिए निम्न पंक्ति 'नाल्ह रसायन आरम्भई' प्रस्तुत की थी । उनके अनुसार रसायन का अर्थ था 'काव्य', पर शुक्त जी का मत भी आज अमान्य हो चुका है।

**पं0 विश्वनाय प्रसाद मिश्र ने 'रासक'** शब्द से रासो की व्युत्पत्ति मानी है। उनका कथन है कि जैसे संस्कृत का **''योटक''** शब्द ब्रज में 'घोड़ों' हो जाता है, उसी प्रकार 'रासक' का 'रासो' हो गया है। उनके अनुसार रासक का अर्थ काव्य था। शुक्ल जी के मत के समान इनका मत भी विद्वानों द्वारा स्वीकार नहीं किया गया।

बैजनाथ खेतान ने रासो का अर्थ राजस्थानी भाषा में ऊहम, युद्ध अथवा प्रेमीजनों का झगड़ा बताते हुए रासो को शुद्ध राजस्थानी शब्द मानते हुए कहा है कि रासो शब्द की व्युत्पत्ति के लिए अन्यत्र जानने की आवश्यकता नहीं । परन्तु डा० दशरथ शर्मा ने उनके मत का विरोध करते हुए कहा है कि राजस्थानी में रासो शब्द अपने मूल अर्थ में नहीं बल्कि लाक्षणिक अर्थ में झगड़े के अर्थ में उसी प्रकार प्रयुक्त हुआ है, जिस प्रकार महाभारत शब्द लड़ाई के अर्थ में हुआ है । अतः रासो की व्युत्पत्ति रासो से नहीं, बल्कि किसी अन्य शब्द से मानी जानी चाहिए ।

### www.neerajbooks.com

2 / NEERAJ : हिन्दी काव्य - 1 (आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी रासो की व्युत्पत्ति 'रासक' शब्द से मानते हैं, जो एक छन्द विशिष्ट अथवा काव्य-भेद के लिए प्रयुक्त होता था। उनका कथन है कि मूल रूप में अपभ्रंश काव्य इसी रासक छन्द तथा इसी काव्य-भेद में लिखे जाते थे। कालान्तर में किसी भी गेय छन्द वाले काव्य को रासक या रासो कहा जाने लगा जैसे बीसलदेव रासो। उनके मतानुसार आरम्भ में ये काव्य प्रेम-प्रहान ही होते थे, बाद में इनमें वीरों की गाथाएँ भी जोड दी गईं।

चन्द्रवली पाण्डेय ने रासो की पुष्पिका में 'रासक' शब्द देखकर यह कल्पना की कि रासो संस्कृत के 'रासक' शब्द से निकला है, जिसका अर्थ उपरूपक का एक भेद है । उनका तर्क यह है कि पृथ्वीराज रासो के आरम्भ में चन्द्र और उसकी पत्नी के मध्य उसी प्रकार का वार्तालाप विद्यमान है, जिस प्रकार उपरूपक के आरम्भ में नट-नटी के बीच वार्तालाप होता है । उनके तर्क के विरुद्ध इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि अनेक रासो कार्व्यों में जैसे 'खुमान रासो' या 'बीसलदेव रासो' में यह नाटकीय पद्धति नहीं है ।

इन सब विद्वानों के मतों में चन्द्रबली पाण्डे और हजारीप्रसाद द्विवेदी के मत सर्वाधिक तर्क-सम्मत प्रतीत होते हैं । इन दोनों के अतिरिक्त विश्वनाथ प्रसाद मिश्र भी रासो की व्युत्पत्ति रासक शब्द से मानते हैं । इन सभी विद्वानों के मतों का समाहार बड़ी विद्वतापूर्ण शैली में जो अधिक तर्कपूर्ण है, *डा0 दशरथ शर्मा ने किया है*। उनके अनुसार *रासो शब्द का प्रयोग कोई आकस्मिक घटना नहीं है, उसका एक क्रमिक इतिहास है* और वह इस प्रकार से है-*श्रीमदुभागवत*, हरिवंश पुराण तथा विष्णु पुराण में रास का उल्लेख मिलता है। यह रास **शं गार-गान-अभिनय** से युक्त एक प्रकार की **न** त्य-**लीला** होती थी। इन रासों के कालान्तर में *तीन भेद* हुए-प्रथम जिसमें नृत्य की विशेषता होती थी, जैसे लगुड रास, द्वितीय श्रव्य रास, जैसे चरचरी तथा *अभिनय रास*, जिनमें अभिनय की प्रधानता होती थी। इन तीनों में *श्रव्य रास* सबसे अधिक *जनप्रिय* होते थे। अतः *जैन आचायौं* ने <sup>¶</sup> ऐसे प्रबन्धों की रचना की जिनमें श्रव्य रास के सभी गुण विद्यमान हों। अभिनय रास से उपरूपक का वह भेद आविर्भृत हुआ जिसे 'रासक' नाम दिया गया । अतः हजारीप्रसाद द्विवेदी इत्यादि ने जो रासक से रासो की उत्पत्ति मानी है, वह उचित नहीं । वस्तूतः रास शब्द से रासक शब्द बना है। जहाँ तक रासो शब्द का प्रश्न है, वह रास शब्द का ही *एक वचनान्त* रूप है और इसका प्रयोग प्रबंधों में अनेक बार हुआ है । प्रारंभ में ये प्रबंध काव्य या रासो काव्य *गेय* और *अभिनेय* होते थे । उनमें कभी *कोमल भाव*, कभी *पुरुष* भाव और कभी दोनों का सम्मिश्रित रूप होता था । इसी परम्परा का विकास रासो-कार्व्यों में हुआ । कदाचित् आरम्भिक अभिनेय तथा गेय रासों में शुंगार वर्णन के साथ-साथ वीरों की पराक्रम तथा शौर्य गाथाएँ और जोड़ दी गईं तथा उन्हीं के विकसित रूप की परिणति रासो प्रबंध-काव्यों में हुई ।

पृथ्वीराज रासो हिन्दी साहित्य का प्रथम महान् ग्रन्थ तथा उसके रचियता चन्द हिन्दी के *प्रथम महाकवि* माने जाते रहे हैं। परन्तु अब विद्वानों में रासो की प्रामाणिकता के संबंध में मतभेद हो जाने से रासो तथा उनके कवि दोनों ही अपने पूर्व गौरव से वंचित होते जा रहे हैं । रासो की प्रामाणिकता के संबंध में *तीन प्रकार* के मत हैं । कुछ विद्वान् जिनमें कर्नल टाड, एफ0 एस0 ग्राउज, गार्सा द तासी, मोतीलाल मेनारिया, जान वीम्स, हार्नले, मिश्रबन्ह, श्यामसुन्दरदास तथा मोहनलाल विष्णुलाल पंडया उल्लेखनीय हैं-इसे प्रामाणिक मानते हैं। दूसरा वर्ग जिसमें *डा0 बूलर, गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, शुक्ल* जी तथा डा0 रामकुमार वर्मा प्रमुख हैं-इसे जाली मानता है। तीसरा वर्ग उन विद्वानों का है जो इसे अर्छ-प्रामाणिक मानते हैं। इनमें डा० सनीतिकमार चटर्जी, मनिजिन विजय, डा० दशरथ शर्मा तथा डा० *हजारीप्रसाद* उल्लेखनीय हैं । डा० बूलर को काश्मीर में प्राचीन ग्रन्थों की खोज करते हुए जयानक कवि रचित 'पृथ्वीराज विजय' नामक काव्य की एक खण्डित प्रति मिली जिसकी घटनाएँ, संवत् , नाम और वंशावलियाँ अधिक इतिहाससम्मत थीं तथा जो 'पृथ्वीराज रासो' में दिए गए तथ्यों से भिन्न थीं । अतः 'रासो' की प्रामाणिकता में संदेह प्रकट किया गया । आगे चलकर ओझा जी ने टाड इत्यादि विद्वानों के मत को अस्वीकार करते हुए इसे अप्रामाणिक सिद्ध करने के लिए अथक परिश्रम किया और निम्न तर्क प्रस्तृत किए-

- 1. पृथ्वीराज रासो के अनुसार आबू के शासक जेन और सबक थे। इसका कोई उल्लेख तत्कालीन शिलालेखों में नहीं मिलता। इतिहास-सम्मत तथ्य तो यह है कि उस समय आबू पर धारावर्ष परमार का शासन था।
- 2. रासो के अनुसार चौहानों की उत्पत्ति अग्निवंशीय क्षत्रियों से है। किंतु 'पृथ्वीराज विजय', जिसे डा० बूलर ने काश्मीर में उपलब्ध किया और जो निश्चय ही अधिक प्रामाणिक ग्रंथ है, क्योंकि उसमें उद्धृत घटनाएँ तथा तिथियाँ शिलालेखों से मिलती हैं, के अनुसार चौहान सूर्यवंशी क्षत्रिय हैं। फिर संवत् 1460 तक चौहानों को सूर्यवंशी क्षत्रिय मानने के भी प्रमाण हैं।
- 3. पृथ्वीराज रासो में दी हुई चौहानों की वंशावली न 'विजोलिया' के शिलालेख से मेल खाती है, न 'पृथ्वीराज विजय' में दी हुई वंशावली से और न 'हम्मीर काव्य' से । रासो के लाहीर वाले रूपांतर में चौहानों की उत्पत्ति ब्रह्मा के यज्ञ से मानी है, परन्तु ल्यु रूपान्तर इसके विषय में कुछ नहीं कहता ।
- 4. रासों के अनुसार पृथ्वीरास की माता का नाम कमला था। परन्तु 'पृथ्वीराज विजय' और 'हम्मीर' काव्य दोनों में उसका नाम कपूर देवी मिलता है। इतिहास से यह भी सिद्ध हो चुका है कि पृथ्वीराज की माँ अनंगपाल की लड़की नहीं थी और न जयचंद अनंगपाल का दौहित्र। रासों का यह तथ्य कि अनंगपाल दिल्ली का राजा था और उसने पृथ्वीराज को गोद लिया था, भी गलत है।

पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता, भाषा और काव्यरूप / 3

- 5. रासो के अनुसार पृथ्वीराज की बहिन **पृथा कुमारी** का विवाह मेवाड़ के राजा समरिसंह से हुआ था, परन्तु ऐतिहासिक खोजों से यह गलत सिद्ध होता है। समर सिंह के समय का प्रथम शिलालेख संवत् 1330 का और अन्तिम संवत् 1352 का मिलता है। अतः समरिसंह पृथ्वीराज के लगभग 109 वर्ष बाद तक रहे।
- 6. रासो के अनुसार गुजरात के राजा भीमिसंह पृथ्वीराज के हाथों मारे गए, पर शिलालेखों में उनका जीवित रहना सं० 1272 तक अर्थात् पृथ्वीराज के 50 वर्ष बाद तक सिद्ध होता है।
- 7. रासो के अनुसार पृथ्वीराज ने 11 वर्ष से 36 वर्ष तक की आयु में 14 *विवाह किए*, पर इतिहास के अनुसार पृथ्वीराज की मृत्यु 30 वर्ष की अवस्था में ही हो गयी थी।
- 8. जयचंद का *राजसूय यज्ञ, संयोगिता स्वयंवर* आदि रासो में वर्णित घटनायें भी इतिहास-सम्मत नहीं हैं, क्योंकि शिलालेखों में उनका कोई संकेत नहीं मिलता ।
- 9. रासो के अनुसार चित्तौड़ के रावल समरसिंह का ज्येष्ठ पुत्र कुम्भा राज्य न मिलने पर सहायता के लिए **बीदर के बादशाह** के पास गया था । परन्तु उस समय तक तो मुसलमान दक्षिण में पहुँचे भी न थे । अतः यह भी गलत है ।
- 10. शहाबुद्दीन गौरी का पृथ्वीराज के हाथों मारा जाना भी असत्य है, क्योंकि वह तो गक्खरों द्वारा संवत् 1263 में मारा गया था।
- 11. रासो में लिखा है कि गौरी **आबू** की लड़ाई में **परमार राजा** द्वारा संवत् 1136 में पराजित हुआ । पर गौरी तो गद्दी पर ही संवत् 1230 में बैठा था ।

इस प्रकार रासो में उल्लिखित अनेक ऐसिहासिक घटनायें असत्य और कपोल-कल्पित हैं । इतना ही नहीं, रासो में दी हुई *तिथियाँ* भी गलत हैं । जैसे-

- 1. रासो के अनुसार **पृथ्वीराज का जन्म सं**0 1115 में हुआ। परन्तु शिलालेखों तथा फारसी इतिहासकारों के अनुसार उसकी जन्म-तिथि सं० 1217 है। इसी प्रकार पृथ्वीराज की मृत्यु रासो में सं० 1158 दी गयी है, जबकि इतिहास सं० 1248 मानता है।
- 2. इसी प्रकार की तिथि-संबंधी अशुद्धियाँ **वीसलदेव** के सिंहासनारूढ़ होने, **पृथ्वीराज के गोद लिए** जाने, **पद्मावती विवाह,** संयोगिता स्वयंवर, आबू पर **भीम चालुक्य का आक्रमण, कैमास की** लड़ाई और गौरी की मृत्यु आदि घटनाओं के संबंध में भी पायी जाती हैं।

रासो की भाषा की परीक्षा करने पर हमें और भी निराशा होती है । रासो में *तीन प्रकार की भाषा है*—

- 1. अनुस्वरान्त भाषा जिसमें कोई स्थिरता नहीं है।
- 2. **आहुनिक साँचे** में ढली हुई भाषा जो वर्तमान हिन्दी के अत्यंत निकट है।
- 3. कवित्तें और दोहों की भाषा जो कृत्रिमता रहित है । कदाचित् यही चंद की मूल भाषा है । रासो में अरबी-फारसी के इतने

अधिक शब्द हैं कि विश्वास नहीं होता कि यह इतना प्राचीन ग्रंथ है। ऐसे शब्द प्रायः दस प्रतिशत हैं और चंद के काल में इतने अरबी-फारसी शब्द किसी भी प्रकार व्यवहार में नहीं आ सकते थे। इसीलिए शुक्ल जी ने कहा था, ''यह ग्रन्थ न तो भाषा के इतिहास के और न ही साहित्य के जिज्ञासुओं के काम का है।'' इस प्रकार ओझा जी आदि विद्वानों ने अपनी युक्तियों द्वारा पृथ्वीराज रासो को अप्रामाणिक सिद्ध किया। डा० हीरेन्द्र वर्मा ने भाषा-विज्ञान की दृष्टि से भी इसे प्रामाणिक नहीं माना।

अपने प्राचीनतम ग्रन्थ को अप्रामाणिक सिद्ध होते देखना कुछ विद्वानों को सहन नहीं हुआ और उन्होंने ओझा जी की युक्तियों के विरोध में निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए *। इतिहास-*संबंधी भ्रॉतियों के उन्होंने तीन कारण माने–

- 1. चंद ने अपने आश्रयदाता के शौर्य और विलास का **अतिशयोक्ति पूर्ण** वर्णन किया है, जिसके कारण गलतियाँ हो जाना स्वाभाविक है। <mark>चन्दं कवि</mark> था, न कि इतिहासकार ।
- 2. ओझा जी ने जिन्हें भ्रॉति बताया है, वे भ्रॉतियॉ नहीं, क्योंकि उनकी सत्यता 'नागरी प्रचारिणी सभा' द्वारा प्रकाशित पट्टे-परवानों से सिद्ध होती है।
- 3. यदि कुछ भ्राँतियाँ हैं भी, तो उनका कारण *क्षेपक* हैं, अतः हमें रासो की *लघुतम प्रति को ही प्रामाणिक मानना चाहिए ।*

*मिश्र बंहुओं ने* रासो को प्रमाणिक सिद्ध करने के लिए कहा –

- 1. पृथ्वीराज रासो तथा बिजौलिया के शिलालेख में दी गई वंशावली का अंतर अत्यंत नगण्य है।
- 2. शहाबुद्दीन की कई बार पराजय का उल्लेख यदि फारसी ग्रन्थों में नहीं है, तो वह **फारसी इतिहासकारों की बेईमानी** है।
- 3. जिन घटनाओं का रासो में उल्लेख है, इतिहास में नहीं, उनके विषय में मिश्र बंधु कहते हैं कि इतिहास यह भी तो नहीं कहता कि ये घटनायें नहीं हुई थीं।

मिश्र बंधुओं के तर्क अत्यंत दुर्बल हैं। अन्तिम दो तो बहुत ही हास्यास्पद हैं, क्योंकि इतिहास केवल उन्हीं घटनाओं अथवा व्यक्तियों का उल्लेख करता है जो हुए हैं।

जहाँ तक अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन की बात है, वह कवि के लिए स्वाभाविक तो है, परन्तु *इतिहास विरुद्ध* घटनाओं तथा व्यक्तियों का वर्णन करना किसी भी प्रकार संगत नहीं ।

जहाँ तक **क्षेपक** का प्रश्न है, कुछ घटनायें जो इतिहास-विरुद्ध हैं, वे रासो की मूल कथावस्तु के साथ इतनी सम्बद्ध हैं कि उन्हें क्षेपक नहीं कहा जा सकता ।

डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी का कथन है कि रासो के वे 'समय' प्रामाणिक हैं, जिनमें शुक-शुकी संवाद है, पर डा० माताप्रसाद उनके विरुद्ध कहते हैं कि प्रक्षेपकार भी तो इन सर्गों की रचना में शुक-शुकी सम्वाद जोड़ सकते थे। उनका कहना है कि रासो का लघुतम पाठ ही प्रामाणिक है। उसमें उक्ति-शृंखला और छंद-शृंखला की पद्धति अपनायी गयी है।

4 / NEERAJ : हिन्दी काव्य - 1 (आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

जहाँ तक *भाषा* में अरबी-फारसी शब्दों के मिश्रण का प्रश्न है. *डा0 श्यामसुन्दर दास* ने यह तर्क प्रस्तुत किया है कि चंद लाहौर का रहने वाला था, अतः अरबी-फारसी के शब्द उसकी कृति में आ जाना स्वाभाविक है। दूसरे, प्रक्षिप्त अंशों में प्रयुक्त अरबी-फारसी शब्दों की संख्या दस प्रतिशत कर दी है । यह तर्क भी कुछ अधिक पुष्ट नहीं है, क्योंकि प्रथम तो यह सिद्ध नहीं होता कि चंद के समय में लाहौर में अरबी-फारसी का प्रचुर प्रचार था। दूसरे, रासो के प्रत्येक समय में अरबी-फारसी के शब्द हैं और यह पता लगाना अत्यन्त कठिन है कि उसमें कितना अंश मूल और कितना प्रक्षिप्त है । *मिश्रबंहुओं* ने विविध शब्दावली के प्रयोग के संबंध में कहा था कि अर्वाचीन प्रयोग रासो की अर्वाचीनता के प्रमाण हैं, तो प्राचीन रूप उसकी **प्राचीनता के ।** परंतु जब हम एक ही छंद में शब्दों के विविध रूप देखते हैं, तो निश्चय ही कहना पड़ता है कि वे बाद में लिखे गए हैं। कुछ विद्वानों ने इसका कारण *लिपिकार का दोष* माना है, पर प्रत्येक प्रति में शब्द का वैसा ही रूप इस तर्क को भी खंडित कर देता है । इन्हीं सब बातों को केन्द्र में रखकर *डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी* ने लिखा है-''अब तक यही विश्वास किया जाता रहा है कि प्रक्षेपों के समुद्र में से मूल कविताओं के मोती चुन लेना असम्भव ही है ।"

मुनि जिनविजय के 'पुरातन प्रबंध संग्रह' में रासो में पाए जाने वाले चार छंद मिले हैं, जिनकी प्रामाणिकता असंदिग्ध है । इनकी भाषा परवर्ती अपभ्रंश या पुरानी हिन्दी के अत्यंत निकट है और उसमें प्राचीन ब्रज के तत्त्व भी प्रचुरता से मिलते हैं । अतः यह तो सिद्ध हो जाता है कि चन्द नाम के कवि पृथ्वीराज के दरबार में थे और उन्होंने पृथ्वीराज से सम्बन्धित ग्रंथ भी लिखा था । रासो का काव्य-रूप भी दसवीं शताब्दी का है और उसमें रासो कार्व्यों की प्रवृत्तियाँ – संवाद, कथानक-रूढ़ियाँ आदि उसे प्राचीन सिद्ध करती हैं। शब्दों का *संयुक्ताक्षररूप* तथा अनुस्वरांत होना भी रासो के प्राचीन होने की ओर संकेत करता है। अतः अब अधिकांश विद्वान उसे अर्छ-प्रामाणिक मानते हैं । उनका मत है कि *रासो मूल रूप में अत्यंत* ल्यू ग्रंथ था। रासो की लघुतम प्रतियों के मिलने के बाद तो यह बात और भी सत्य सिद्ध हो जाती है, क्योंकि उसमें सभी अनैतिहासिक बातों का अभाव है । अतः हमारा भी यही मत है कि रासो अपने लघुतम रूप में प्रामाणिक ग्रंथ हैं । विद्वानों ने निरर्थक तर्क-वितर्क के द्वारा इसके संबंध में भ्रांतियाँ उत्पन्न कर दी हैं। इस संबंध में डा० *हजारी प्रसाद द्विवेदी* के निम्न शब्द अत्यंत संगत हैं-''इस निरर्थक मन्थन से जो दुस्तर फेनराशि तैयार हुई है, उसे पार करके ग्रन्थ के साहित्यिक रस तक पहुँचना हिन्दी साहित्य के विद्यार्थी के लिए असम्भव-सा व्यापार हो गया है।"

प्रश्न 2. पृथ्वीराज रासो के काव्यरूप पर विचार कीजिए। अथवा

''पृथ्वीराज रासो सामन्त युग का प्रतिनिहि महाकाव्य है'' इस कथन की समीक्षा कीजिए ।

उत्तर—मध्यकाल में लिखे गये प्रबंधकाव्य काव्यरूप की दृष्टि से मिश्रित काव्यरूप थे । उसमें कथा-काव्य, चिरत काव्य, आख्यायिका, रोमानी आख्यान (पंवारा) रासो कई रूपों का मिश्रण पाया जाता है । उसमें संस्कृत महाकाव्यों के लक्षण नहीं पाये जाते, जैसे छंदों का विधान, सर्ग-योजना, नायक आदि । पृथ्वीराज रासो भी प्राकृत-अपंभ्रश भाषाओं में लिखे गये प्रबंधकाव्यों की परम्परा में लिखा गया काव्य है । उसमें शुक-शुकी तथा कवि-पत्नी के संवाद कथा-काव्य की तरह हैं । कथा का नायक कल्पित होता था जैसे बाणभट्ट की 'कादम्बरी' का नायक, जबिक आख्यायिका का नायक ऐतिहासिक होता था जैसे बाणभट्ट के 'हर्षचरित्' का, इस दृष्टि से पृथ्वीराज रासो आख्यायिका है । वह चरितकाव्य है क्योंकि उसमें पृथ्वीराज का जीवन-चरित वर्णित है ।

यद्यपि कुछ आलोचकों ने पृथ्वीराज रासो को रोमांचक आख्यान कहा है क्योंकि उसके कथानक-विधान में आंतरिक गठन नहीं है, वह असम्बद्ध कथाओं का-नायक के विभिन्न विवाहों और उनसे सम्बद्ध युद्ध आदि प्रसंगों का संकलन है, इनमें विस्तार भी है। इन विवादों और युद्धों में कोई तार्किक प्रवाह या अंतः सूत्रता नहीं है।

प्रश्न उठता है कि इन सब त्रुटियों के होते हुए भी पृथ्वीराज रासो को महाकाव्य का पद और प्रतिष्ठा क्यों प्राप्त हुई । सभी विद्वान मानते हैं कि उसका प्रामाणिक रूप उसका लघुतम पाठ है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा डा० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार केवल दस प्रसंग ही चन्दबरदाई द्वारा लिखे गये थे, बाद में जोड़े गये अंशों के कारण ही वह वृहदकाय बन गया । यह लघु काव्य महाकाव्य कैसे बन गया ? इसका उत्तर हमें मिलता है इतिहास में, उत्तर भारत के राजनीतिक घटना-चक्र में । पृथ्वीराज चौहान दिल्ली के सिंहासन पर विराजमान होने वाला अंतिम हिन्दू शासक था । मुहम्मद गोरी के हाथों उसकी पराजय से एक यूग का अंत हो गया और अन्तिम हिन्दू राजा होने के कारण हिन्दुओं में उनके प्रति आदर, गौरव व प्यार के भाव उमड़ पड़े। वह हिन्दुओं के नायक बन गये, अनेक निजंधरी (लीजेंडरी) कथाएं और किवंदत्तियां उनके साथ जोड़ दी गयीं । परिणाम यह हुआ कि जन-मानस की इस मनोवृत्ति के परिणामस्वरूप रासो के मूल पाठ में अनेक प्रक्षिप्त अंश जुड़ते चले गये । आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी लिखते हैं-वह लोकचित्त की चंचल सवारी करता हुआ विकासशील महाकाव्य (epic of growth) बन गया । इस प्रकार इस छोटी सी काव्य-रचना को महाकाव्यात्मक गौरव और गरिमा प्राप्त हुई । यह युग-नायक की गाथा तथा जातीय-राष्ट्रीय इतिहास की महत्त्व रचना बन गया ।